





टिप्पणी: शिक्षक मरकुस से पढ़ाना पसंद कर सकते हैं क्योंकि यह अधिक संक्षिप्त है, और यीशु मत्ती में कई ऐसी बातों का उल्लेख करते हैं जिन्हें इस पाठ में शामिल नहीं किया जाएगा।

फरीसी उस समय के धार्मिक नेता थे; वे यहूदी लोगों का नेतृत्व करते थे और उन्हें पुराने नियम से शिक्षा देते थे।

यह आज के हमारे चर्च के नेताओं के समान होगा। लेकिन फरीसी बहुत घमंडी लोग थे और हमेशा चाहते थे कि हर कोई यह जाने कि वे कितने अच्छे हैं और मूसा द्वारा दिए गए सभी आदेशों का पालन करते हैं। उन्होंने कुछ अतिरिक्त नियम और "परंपराएं" भी बनाई जिनका वे स्वयं पालन करते थे और दूसरों से भी उनका पालन करने की अपेक्षा करते थे, ताकि वे और अधिक पवित्र दिखें।

पहले इसे समझाएं, ताकि उन्हें यह समझ आ जाए कि ईसा मसीह के समय में चीजें कैसी थीं। फिर नियमों और लोगों द्वारा पालन किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के नियमों के बारे में बात करें। हालांकि ये फरीसी सभी नियमों का पालन करते थे, *नियमों का पालन करने से उनके हृदय में कोई सुधार नहीं आया।*

कानून के आदेशों का पालन करने से कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के साथ सही संबंध स्थापित नहीं कर सकता। कानून तो बस हमें यह दिखाता है कि हम कितने पापी हैं। रोमियों 3:20

फरीसियों का यीशु से अनेकों विवाद हुए, और अंततः उन्होंने ने उन्हें मृत्युदंड दिया। वे हमेशा लोगों को गलत काम करते हुए पकड़ने और उन्हें उनकी गलती का एहसास कराने की कोशिश करते थे। यीशु ने इसके विपरीत किया। उन्होंने पापों और कमियों की ओर इशारा नहीं किया, बल्कि प्रेम से अनुग्रह और सच्चाई दिखाई, और इसी से लोगों ने पश्चाताप किया।

लेकिन यीशु ने फरीसियों की आलोचना की। उन्होंने अपना अधिकांश समय उन्हें यह समझाने में बिताया कि पवित्रता के उनके तरीके कभी भी परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप नहीं थे। क्योंकि वे सभी आज्ञाओं का पालन करते थे, इसलिए वे सही कार्य करते हुए प्रतीत होते थे और अन्य लोग उन्हें अत्यंत पवित्र समझते थे। सभी आज्ञाओं का पालन करने से उनमें अहंकार पैदा हो गया था और उनका हृदय विकृत था। यीशु ने कहा कि उन्होंने नियमों और परंपराओं को परमेश्वर के वचन से अधिक महत्व दिया, और परमेश्वर के वचन का उनके जीवन में कोई प्रभाव नहीं था।

यीशु अक्सर फरीसियों को पाखंडी कहते थे; समझाइए कि पाखंडी क्या होता है।

पाखंडी वह व्यक्ति होता है जो दूसरों का पक्ष जीतने के लिए ढोंग करता है और दिखावा करता है। बाहरी तौर पर वे असलियत से कहीं बेहतर दिखते हैं; वे मूलतः ढोंगी या धोखेबाज होते हैं, और दूसरों से उन्हीं नियमों और मूल्यों का पालन करने की अपेक्षा रखते हैं जिनका वे स्वयं पालन करने का दिखावा करते हैं। वे इस बात का बखान करते थे कि उन्होंने मूसा के सभी नियमों का पालन किया है।

कहानी की शुरुआत इस बात से होती है कि फरीसियों ने यीशु के कुछ लोगों को बिना हाथ धोए रोटी खाते हुए देखा।

फरीसी लोग कभी भी हाथ धोए बिना भोजन नहीं करते थे। यहाँ तक कि उनके प्याले, बर्तन और मेज धोने के बारे में भी अलग-अलग नियम थे।

तब फरीसी यीशु के पास आए और बोले, “आपके चेले हमारी परंपराओं (अपने नियमों) का पालन क्यों नहीं करते और बिना हाथ धोए भोजन क्यों नहीं करते?” यीशु ने उन्हें पाखंडी कहा और यशायाह 29:13 की भविष्यवाणी का हवाला दिया। उसमें लिखा है कि ये लोग दिखावटी तौर पर परमेश्वर का आदर करते हैं, परन्तु उनका हृदय परमेश्वर से बहुत दूर है। उनकी उपासना व्यर्थ है क्योंकि उन्होंने अपने नियम बना लिए हैं और उन्हें परमेश्वर के नियम बनाकर सिखाते हैं।

फिर यीशु ने आस-पास मौजूद सभी लोगों को बुलाया और उन्हें सुनने के लिए कहा ताकि वे समझ सकें:

किसी व्यक्ति के बाहर ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो उसे अपवित्र कर सके, बल्कि जो चीज़ व्यक्ति के भीतर से निकलती है वही उसे अपवित्र करती है।



मनुष्य का हृदय

चर्चा करना:

“अपवित्र करना” शब्द का क्या अर्थ है?

अपवित्र करने का अर्थ है दूषित करना, खराब करना (जैसे खराब भोजन) या अशुद्ध करना।

कौन-कौन सी चीजें अपवित्र हो जाती हैं? गंदा पानी अपवित्र हो जाता है, इत्यादि।

पानी में कुछ डालने से वह दूषित या अपवित्र हो सकता है; लेकिन यीशु कह रहे थे कि लोगों के मामले में ऐसा नहीं है।

तब यीशु ने कहा, यदि किसी के पास सुनने के कान हैं, तो वह सुने।

इसका मतलब यह है कि इसे सुनने वाले हर व्यक्ति को समझ नहीं आएगा; व्यक्ति को प्रभु के प्रति अपना हृदय खोलना होगा और अपने हृदय से देखना होगा।

जब यीशु बाकी लोगों के पास से चले गए, तो शिष्य उनके पास आए और उनसे उस दृष्टांत के बारे में पूछा, क्योंकि वे उसे समझ नहीं पाए थे। यीशु ने कहा, “क्या तुम भी नहीं समझते?”

वे हर समय उनके साथ थे, फिर भी उन्हें समझ नहीं आई। आज हमारे भीतर पवित्र आत्मा निवास करता है जो हमें समझ प्रदान करता है।

यीशु ने फिर समझाया। उन्होंने कहा कि जो कुछ भी तुम्हारे शरीर में प्रवेश करता है, वह तुम्हें अशुद्ध नहीं कर सकता, क्योंकि वह तुम्हारे हृदय में नहीं जाता। वह तुम्हारे पेट में जाता है और शौचालय जाते समय बाहर निकल जाता है। अशुद्ध तो वह है जो व्यक्ति से बाहर निकलता है। तुम्हारे हृदय में बुरे विचार, अनुचित विचार, चोरी, हत्या, लोभ, द्वेष, छल, ईर्ष्या, अहंकार और मूर्खता है। एक शिक्षक के रूप में आप इस पर विस्तार से समझा सकते हैं और ऐसे उदाहरण दे सकते हैं जिन्हें वे समझ सकें।

वह अंत में कहते हैं, ये बुरी चीजें भीतर से आती हैं, और यही चीज़ व्यक्ति को अपवित्र करती है।

मैथ्यू ने इसे और अधिक विस्तार से बताया है, और कहा है कि जो कुछ किसी के मुंह से निकलता है वह उसके दिल से आता है, और यही बात व्यक्ति को अपवित्र करती है।

कहानी में यीशु



यहूदियों का मानना था कि परमेश्वर को प्रसन्न करने का अर्थ है नियमों का पालन करना और सभी आज्ञाओं को मानना, लेकिन परमेश्वर की दृष्टि में यह हमेशा हृदय से संबंधित था। फरीसी सभी नियमों का पालन करते थे, लेकिन इससे उनका अहंकार ही बढ़ता था। वे हर किसी का न्याय करते थे और हर काम सही ढंग से करने की अपनी क्षमता पर घमंड करते थे। यीशु ने बार-बार उन्हें उनके कपट के बारे में बताया। उन्होंने उनके दिखावे को पहचान लिया और इससे वे क्रोधित हो गए क्योंकि उनके हृदय शुद्ध नहीं थे।

अब हमारे पास ईश्वर से संवाद करने का एक बिल्कुल अलग तरीका है।

जब हम यीशु पर विश्वास करते हैं, तो हमें एक नया हृदय मिलता है, अब हमारे भीतर उनकी आत्मा निवास करती है और यह हमें एक नए व्यक्ति में बदल देती है।

मैं तुम्हें नया हृदय दूंगा और तुम्हारे भीतर नई आत्मा डालूंगा। यहजकेल 36:26

इसका अर्थ यह है कि जो कोई भी मसीह से जुड़ा है, वह एक नया व्यक्ति बन गया है। 2 कुरिन्थियों 5:17

नीतिवचन हमें अपने हृदय की रक्षा करने के लिए कहता है।

हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि हम किन चीजों के बारे में सोचते हैं और ध्यान लगाते हैं, हम क्या देखते हैं, हम किन चीजों के बारे में बात करते हैं, और हम अपने दिलों में किस तरह के दृष्टिकोण को पनपने देते हैं।

हम अपने हृदय की रक्षा करने का एक तरीका यह है कि हम हमेशा ईश्वर की महिमा और स्तुति करें।

इससे हमारा ध्यान स्वयं से हटकर प्रभु पर केंद्रित हो जाता है। जब हम स्वयं पर और अपनी अच्छाइयों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हमारा हृदय दूषित हो जाता है। जब हम प्रभु और उनकी अच्छाइयों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो इससे हमें अपने हृदय की रक्षा करने में सहायता मिलती है।

जो आपके दिल में है, वही बाहर आएगा।

जो बातें आपके दिल में हैं, उन्हीं के बारे में आप बात करते हैं। आप अपने दिल में बुरी बातों को पनपने नहीं देना चाहते, इसलिए इसे यीशु की बातों से भरें; उन्हें अपना प्रेम दिखाने दें और दूसरों से प्रेम करना सिखाएं।



पाठ के प्रश्न और स्मरण श्लोक

29. चट्टान पर

1. इस कहानी में कितने प्रकार के लोग हैं?
2. किस प्रकार का व्यक्ति यीशु की बातों का पालन करता है?
3. ऐसा कौन सा व्यक्ति है जो यीशु की बात नहीं मानता?
4. उस मूर्ख व्यक्ति ने अपना घर किस आधार पर बनाया था?
5. किसका घर नींव हीन था?

भजन संहिता 62:6-7

वही मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है। वही मेरा रक्षक है; मैं विचलित नहीं होऊंगा। परमेश्वर में ही मेरा उद्धार और मेरी महिमा है; परमेश्वर ही मेरी शक्ति और शरण का स्रोत है।

30. गेहूं में खरपतवार

1. नौकरों को कैसे पता चल सकता था कि खेत में कुछ और भी बोया गया है?
2. वे पहले क्यों नहीं बता सके?
3. एकमात्र अंतर क्या था?
4. जब उन्हें पहली बार में ही पता चल गया था कि खरपतवार क्या हैं, तो उन्होंने उन्हें क्यों नहीं उखाड़ा?
5. खरपतवार किसका प्रतिनिधित्व करते हैं?

मत्ती 7:15-16

झूठे नबियों से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु भीतर से वे भूखे भेड़िये होते हैं। तुम उन्हें उनके कर्मों से पहचानोगे। क्या मनुष्य कंटीली झाड़ियों से अंगूर या कंटीली झाड़ियों से अंजीर तोड़ते हैं?

31. खमीर के दो प्रकार

1. कहानी में वर्णित महिला ने आटे की कितनी मात्रा का उपयोग किया?
2. क्या आटे से खमीर निकालना संभव है?
3. इसके बजाय आपको क्या करना होगा?
4. अपने शब्दों में बताइए, “फरीसियों का खमीर” क्या है? (लूका 12:1)

प्रेरितों 5:38-39

इसलिए इनके विषय में मेरी सलाह यह है कि आप इन्हें छोड़ दें और इनसे दूर ही रहें क्योंकि यदि इनके कार्य की उपज और योजना मनुष्य की ओर से है तो यह अपने आप ही विफल हो जाएगी; मगर यदि यह सब परमेश्वर की ओर से है तो आप उन्हें नाश नहीं कर पाएँगे—ऐसा न हो कि इस सिलसिले में आप स्वयं को परमेश्वर का ही विरोध करता हुआ पाएँ।”

32. मनुष्य का हृदय

नीतिवचन 4:20-23 पढ़ें

1. हमें किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?
2. हमें किस बात पर ध्यान देना चाहिए?
3. हमें परमेश्वर के वचन को कहाँ रखना चाहिए?
4. हमारे शरीरों के लिए परमेश्वर का वचन क्या है?

नीतिवचन 4:23

सबसे बड़ी बात यह है कि तू अपने विचारों के बारे में सावधान रह। क्योंकि तेरे विचार जीवन को नियंत्रण में रखते हैं।

